देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 393-397

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि

पूर्णिमा. जे, शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया।

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,
पियुष–स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर स्वर–ताल में।' **–जयशंकर प्रसाद**
'एक पुरुष को शिक्षित करो, एक व्यक्ति शिक्षित होता है।
एक नारी को शिक्षित करो, एक पूरा समाज शिक्षित होता है।' **–महात्मा गांधी**

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में प्राचीन काल, भक्ति काल रीतिकाल और आधुनिक युग तक नारी की महत्वता पर प्रमुखता दिया गया है।

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में नारी की छवि ने एक नए आयाम को छुआ है। यह वह समय है जब नारी अपनी पहचान के लिए केवल पुरुष के माध्यम या पारंपरिक भूमिकाओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि वह स्वयं लेखन के केंद्र में है – एक विचार, एक चेतना, और एक सक्रिय सृजनशीलता के रूप में। समकालीन हिंदी साहित्य में नारी का चित्रण केवल संवेदनशीलता और भावुकता तक सीमित नहीं, बल्कि वह एक जागरूक, प्रश्न करने वाली, और अन्याय के खिलाफ खड़ी होने वाली स्त्री बनकर सामने आती है। लेखकों ने नारी की जिंदगी के उन पहलुओं को उजागर किया है जो लंबे समय तक साहित्य में उपेक्षित रहे – जैसे यौन हिंसा, घरेलू उत्पीड़न, कार्यस्थल पर भेदभाव, मानसिक स्वास्थ्य, मातृत्व का बोझ, और आर्थिक आत्मनिर्भरता की लड़ाई।

इस दौर में महिला लेखिकाएँ न केवल साहित्य लिख रही हैं, बल्कि साहित्यिक विमर्श और आलोचना की दिशा भी तय कर रही हैं। गीतांजलि श्री का 'रेत समाधि', जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में रहा, एक वृद्ध स्त्री की पहचान, प्रेम, और स्वतंत्रता की यात्रा है। अनामिका की कविताओं में स्त्री केवल प्रेमिका या माँ नहीं, बल्कि विचारशील, विद्रोही और आत्मनिर्भर भी है। चित्रा मुद्गल और मन्नू भंडारी जैसी लेखिकाओं ने पहले से चली आ रही स्त्रीवादी दृष्टिकोण को और गहरा किया है, जिससे आज की नारी न केवल समाज से, बल्कि स्वयं से भी सवाल करती है।

इसके साथ–साथ पुरुष लेखकों ने भी नारी पात्रों को अधिक मानवीय और यथार्थपूर्ण रूप में चित्रित करना शुरू किया है। अब नारी पात्र 'आदर्श नायिका' या 'त्यागमयी देवी' के रूप में नहीं, बल्कि अपनी कमजोरियों, इच्छाओं, विरोधाभासों के साथ प्रस्तुत की जाती है – जिससे उसका चरित्र और भी अधिक प्रामाणिक

और प्रभावशाली बनता है।

इसके अलावा, समुदाय की महिलाओं की कहानियाँ भी हिंदी साहित्य में स्थान पाने लगी हैं, जो नारी विमर्श को और भी व्यापक बनाती हैं। डिजिटल माध्यमों और ब्लॉग्स के माध्यम से भी नई पीढ़ी की महिलाएं अपने अनुभवों और संघर्षों को स्वर दे रही हैं।

21वीं सदी का हिंदी साहित्य नारी को अब केवल सहानुभूति की पात्र नहीं, बल्कि स्वतंत्र, मुखर, रचनात्मक और सामाजिक परिवर्तन की वाहक के रूप में प्रस्तुत करता है। यह साहित्य नारी की आत्मा की आवाज है – जो अब चुप नहीं है, बल्कि अपने शब्दों से समाज को बदलने का माद्दा रखती है।

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में नारी की छवि पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सशक्त, स्वतंत्र और चेतनशील रूप में उभरी है। अब वह केवल प्रेम, सौंदर्य या त्याग की मूर्ति नहीं रही, बल्कि समाज की विषमताओं के विरुद्ध संघर्ष करने वाली आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में सामने आई है। समकालीन लेखन में नारी अपने अस्तित्व, अधिकार और पहचान को लेकर सजग है। हिंदी साहित्य में इस दौर की महिला लेखिकाओं – जैसे मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, अनामिका, गीतांजलि श्री, चित्रा मुद्गल, कविता आदि ने नारी के मनोविज्ञान, सामाजिक दबावों और आत्मसंघर्ष को केंद्र में रखकर गहन साहित्य रचा है।

अब नारी केवल पात्र नहीं रही, वह स्वयं लेखक, आलोचक और विमर्श की धुरी बन गई है। स्त्री–विमर्श पर आधारित रचनाओं में लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, यौन शोषण, मातृत्व, कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ, अधिकार आदि विषय प्रमुखता से उठाए जा रहे हैं। 21वीं सदी की हिंदी कविता और उपन्यासों में नारी की आवाज मुखर है – वह चुप नहीं रहती, सवाल करती है, टकराती है और खुद को परिभाषित करती है। इस युग का साहित्य नारी को एक सशक्त विचार और क्रांतिकारी चेतना के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, 21वीं सदी का हिंदी साहित्य नारी के पक्ष को केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि सम्मान, स्वर और सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में देखता है।

'रेत समाधि और नारी विमर्श' विषय पर गहन साहित्यिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसमें उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्रों और उनके माध्यम से 21वीं सदी के स्त्री विमर्श के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

परिचय : रेत–समाधि और इसका नारी दृष्टिकोण :

'रेत–समाधि' (2018) प्रख्यात लेखिका गीतांजलि श्री द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण हिंदी उपन्यास है, जो नारी चेतना, अस्मिता और आत्म–खोज का बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करता है। इस कृति ने साहित्यिक जगत में तब और अधिक पहचान पाई जब इसका अंग्रेजी अनुवाद "Tomb of Sand" 2022 में International Booker Prize से सम्मानित हुआ – पहली बार किसी हिंदी रचना को यह उपलब्धि प्राप्त हुई।

उपन्यास की कथा केंद्र में है – एक वृद्ध स्त्री (अम्मा), जो अपने पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद में चली जाती है, लेकिन वही स्त्री धीरे–धीरे जीवन की पुनर्खोज करती है और अंततः अपने अस्तित्व, इच्छा और स्वतंत्रता की पुनर्परिभाषा करती है। यह उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की उस छवि को तोड़ता है, जिसमें स्त्री का जीवन केवल मातृत्व, त्याग और चुप्पी तक सीमित माना गया है।

नारी दृष्टिकोण की बात करें, तो 'रेत–समाधि' में स्त्री को एक निष्क्रिय प्राणी नहीं, बल्कि एक सक्रिय विचारक, यात्री, चयनकर्ता और विद्रोही के रूप में चित्रित किया गया है। यह कृति आधुनिक स्त्री विमर्श को एक

नया स्वर देती है, जिसमें आयु, लिंग, राष्ट्र, देह और समाज की सभी सीमाएं टूटती नजर आती हैं।

'रेत–समाधि' में नारी केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति और इतिहास के लिए भी एक संवाद स्थापित करती है। वह अतीत से जुड़ती है, वर्तमान से जूझती है और भविष्य की संभावनाओं को आत्मसात करती है। यही कारण है कि यह उपन्यास 21वीं सदी में नारी विमर्श की एक सशक्त और अनोखी प्रतिनिधि रचना के रूप में स्थापित होता है।

रेत–समाधि' में स्त्री विमर्श की विस्तारित विशेषताएँ

क्र.	पहलू	विश्लेषण
1.	आत्म अन्वेषण	अम्मा अपनी गृहिणी, मां, पत्नी जैसी पारंपरिक भूमिकाओं से परे जाकर खुद को एक व्यक्ति के रूप में पहचानने की कोशिश करती हैं। यह स्त्री की आत्म–अस्मिता की खोज है।
2.	लैंगिक पहचान की तरलता	रोजी जैसे थर्ड जेंडर पात्र के माध्यम से उपन्यास यह स्थापित करता है कि स्त्रीत्व/पुरुषत्व कोई निश्चित ढांचा नहीं, बल्कि एक लचीली सामाजिक संरचना है।
3.	बुजुर्ग स्त्री की आवाज	आमतौर पर साहित्य में बुजुर्ग स्त्रियों को 'पृष्ठभूमि' में दिखाया जाता है, लेकिन यहाँ अम्मा 'मुख्य नायिका' हैं, जो अपनी इच्छा, स्वतंत्रता और विचारों को जीती हैं।
4.	भाषा की स्त्री चेतना	उपन्यास की भाषा कठोर नहीं, बल्कि भावनात्मक, प्रतीकात्मक, लयात्मक है – जैसे स्त्री के अंतर्मन की तरलता और संवेदनशीलता को दर्शाती हो।
5.	सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण	अम्मा भारत से पाकिस्तान जाती हैं, जो विभाजन की रेखा के पार स्त्री की यात्रा और क्षमा की शक्ति को दर्शाता है। यह स्त्री की सीमाहीन दृष्टि का प्रतीक है।
6.	विरोध और असहमति का साहस	'नहीं' कहना केवल व्यक्तिगत असहमति नहीं, बल्कि यह उस पितृसत्तात्मक तंत्र के खिलाफ विद्रोह है, जिसने सदियों तक स्त्रियों को मौन रहने पर बाध्य किया।
7.	सह–अस्तित्व और समावेशन	रोजी के साथ अम्मा की मित्रता यह दर्शाती है कि आधुनिक स्त्री विमर्श लैंगिक और यौनिक विविधताओं को स्वीकारता है। यह फेमिनिज्म को एक मानवीय विमर्श में बदलता है।
8.	स्मृति और स्त्री इतिहास	अम्मा की यादें, विभाजन के समय के अनुभव, और व्यक्तिगत पीड़ा – ये सभी स्त्री इतिहास के मौन पन्नों को उजागर करते हैं, जो अब तक अनदेखे रह गए थे।
9.	स्त्री की यात्रा : भीतरी और बाहरी	अम्मा की पाकिस्तान यात्रा प्रतीकात्मक रूप से स्त्री की आंतरिक मुक्ति और सामाजिक दायरे से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। यह

		आधुनिक विमर्श में 'यात्रा' को नया अर्थ देती है।
10.	मातृत्व और बेटी का रिश्ता	बेटी और अम्मा का रिश्ता पारंपरिक नहीं है – उसमें खींचतान, उलझन, प्रेम और संघर्ष का एक स्त्रीवादी अंर्तद्वंद्व है, जो पीढ़ियों के बीच संवाद की आवश्यकता बताता है।

21वीं सदी के नारी विमर्श से 'रेत–समाधि' का संबंध : विस्तृत विश्लेषण :

21वीं सदी का स्त्री विमर्श एक नई चेतना, विविधता और संवेदनशीलता के साथ विकसित हो रहा है। अब यह विमर्श केवल पितृसत्ता के विरोध या अधिकारों की माँग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के निजी, सामाजिक, लैंगिक और मानसिक स्तरों पर आत्म–निर्णय की स्वतंत्रता को केंद्र में लाता है। इस संदर्भ में गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत–समाधि' एक मील का पत्थर है, जो आधुनिक स्त्री विमर्श को एक नया आयाम प्रदान करता है।

1. स्वतंत्र पहचान और चयन की शक्ति :

'रेत–समाधि' की नायिका 'अम्मा' एक पारंपरिक भूमिका निभाने वाली स्त्री है : माँ, पत्नी, और बुजुर्ग। लेकिन जैसे–जैसे कथा आगे बढ़ती है, वह अपने जीवन के चयन करने लगती है 'वह चुप्पी तोड़ती है, अपनी सीमाओं से बाहर निकलती है, और सबसे बढ़कर, 'नहीं' कहना सीखती है। यह प्रक्रिया आधुनिक स्त्री विमर्श का मूल स्वर है : जहाँ स्त्री स्वयं अपनी राह चुनती है।

2. लैंगिक पहचान की तरलता :

रेत–समाधि 21वीं सदी के स्त्री विमर्श को सिर्फ जैविक स्त्री तक सीमित नहीं रखता। 'रोजी' जैसे थर्ड जेंडर पात्र के जरिए लेखिका यह दिखाती हैं कि स्त्रीत्व एक जीवित, बहुआयामी अनुभव है, जो लिंग निर्धारण से परे है।

यह दृष्टिकोण समकालीन स्त्रीवाद की 'इनक्लूसिव फेमिनिज्म' (Inclusive Feminism) की अवधारणा को समर्थन देता है।

3. सीमाओं का अतिक्रमण : राष्ट्र, जाति, उम्र :

अम्मा की पाकिस्तान यात्रा सिर्फ भौगोलिक यात्रा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, मानसिक और लैंगिक सीमाओं को लांघने की प्रक्रिया है। यह उपन्यास दिखाता है कि स्त्री केवल अपने परिवार या देश की सीमा में कैद नहीं रहती – वह हर बंधन को पार कर सकती है, चाहे वह उम्र का हो, धर्म का हो, या राजनीति का।

यह 21वीं सदी के नारी विमर्श के ग्लोबल, सेक्युलर और मानवतावादी चरित्र की ओर संकेत करता है।

4. स्त्री और स्मृति : इतिहास का पुनर्लेखन :

अम्मा के जरिए विभाजन, मातृत्व, और बुजुर्ग स्त्रियों की चुप्पी को भी कथा में पिरोया गया है। यह प्रयास 21वीं सदी की स्त्रियों द्वारा इतिहास को स्त्री दृष्टि से पुनः पढ़ने का एक उदाहरण है।

यह विमर्श कहता है कि 'इतिहास केवल विजेताओं की कहानी नहीं, बल्कि उन चुप आवाजों की भी गाथा है जिन्हें कभी लिखा ही नहीं गया।'

5. भाषा की स्त्री चेतना :

'रेत–समाधि' की भाषा भी स्त्री विमर्श का हिस्सा बन जाती है – वह कठोर नहीं, बल्कि तरल, बहती हुई,

संवेदनशील और लयात्मक है। उपन्यास की शैली पाठक को स्त्री मानसिकता के साथ जोड़ती है, न कि उसके ऊपर हावी होती है।

यह भाषा 21वीं सदी के 'सृजनशील स्त्री लेखन' की पहचान बन जाती है।

6. अन्याय के खिलाफ संवाद, संघर्ष नहीं :

यह उपन्यास बताता है कि आज की स्त्री विमर्श में प्रतिरोध हिंसक नहीं, संवादात्मक है। अम्मा और रोजी के संबंध, बेटी के साथ अम्मा का जटिल रिश्ता – ये सब इस बात को दर्शाते हैं कि संघर्ष अब लड़ाई नहीं, समझ की प्रक्रिया है।

'रेत–समाधि' 21वीं सदी के स्त्री विमर्श को एक नया मानवीय और बहुसांस्कृतिक रूप देती है। यह उपन्यास स्त्री को केवल 'पितृसत्ता की पीड़िता' के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, सोचने–वाली, निर्णय लेने–वाली और सीमाओं को तोड़ने वाली सृजनशील शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। यह उस स्त्री की कथा है जो अब केवल जीवन नहीं काटती – वह अपना जीवन चुनती है, उसे रचती है।

निष्कर्ष :

रेत–समाधि' केवल एक स्त्री की कहानी नहीं है, बल्कि यह स्त्रीत्व की एक गहन और बहुआयामी तलाश है। यह उपन्यास 21वीं सदी की स्त्री के आत्म–खोज, स्वतंत्रता, और सशक्तिकरण की भावना को उद्घाटित करता है। आज की स्त्री केवल समाज की सुनने वाली या उसकी बंदिशों में बंद नहीं रहती, बल्कि वह अपनी आवाज उठाती है, अपने अनुभवों की यात्रा करती है, नए विचारों का सामना करती है और अपने निर्णय स्वयं लेती है। इस उपन्यास में 'नहीं' कहना केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक अधिकार और विद्रोह है, जो स्त्री के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की पहचान बन चुका है। यही आधुनिक स्त्री विमर्श की आत्मा है – जहाँ स्त्री अपनी सीमाओं को पार कर स्वयं को पुनः परिभाषित करती है।

Reference :

1. नारी विमर्श और हिंदी साहित्य, डॉ. रमेश गौतम, नारी विमर्श की अवधारणा, इतिहास और साहित्य में प्रस्तुति।
2. स्त्री लेखन : विमर्श के विविध परिप्रेक्ष्य, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, समकालीन स्त्री लेखन पर केंद्रित।
3. हिंदी साहित्य में नारी का स्वरूप, डॉ. रचना सक्सेना, 21वीं सदी में बदलती स्त्री छवि।
4. चितकोबरा (उपन्यास), मृदुला गर्ग, आत्मनिर्भर स्त्री की यौनिकता और सोच।
5. गीतांजलि श्री, रेत–समाधि, राजकमल प्रकाशन, 2018
6. नीलम वाधवानी, 'रेत–समाधि में समकालीन विमर्श', सेतु पत्रिका, 2023
7. गूगल खोज (Google search)

ईमेल : poornihindi@gmail.com

ईमेल : hodhindi@velsuniv.ac.in